JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनसांख्यिकीय विशेषताओं का क्षेत्रीय प्रतिरूप विश्लेषण : अलवर जिले के विशेष संदर्भ में भौगोलिक समीक्षा

१ राकेश यादव -सहायक आचार्य, भूगोल विभाग बानसूर पी.जी. महाविद्यालय बानसूर (अलवर)
२. अजय कुमार यादव - सहायक आचार्य, भूगोल विभाग बानसूर पी.जी. महाविद्यालय बानसूर (अलवर)

शोध सारांश :-

जनसंख्या भूगोलवेताओं सहित सभी वैज्ञानिकों के लिए अध्ययन का मुख्य विषय रहा है। प्राचीनकाल में महान विचारक अरस्तु ने राज्य के स्तम्भ के रूप में जनसंख्या को एक प्रमुख तत्व माना हैं। किसी भी देश में जनसंख्या उस देश का प्रमुख संसाधन है और जनसंख्या का समग्र विकास अर्थात् सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे और विविध सांस्कृतिक परिदृश्य में योगदान रहता हैं। जनसंख्या अपने मात्रात्मक एवं गुणात्मक विशेषताओं के अनुसार किसी भी क्षेत्र के संसाधन विकल्पों में अभिवृद्धि करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में अलवर जिले की जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता आदि जनसांख्यिकीय विशेषताओं के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द :- जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, आयु संरचना।

प्रस्तावना :-

जनसंख्या भूगोल का उद्गम 20 वीं शताब्दी के पुर्वाद्ध में भूगोल विषय के विशिष्ट शाखा के रूप में उदय हुआ। जनसंख्या भूगोल को भूगोल की क्रमबद्ध शाखा के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय ट्रिवार्था (सन् 1953) को जाता है। जी. टी. ट्रिवार्था के अनुसार " जनसंख्या भूगोल के मूल तत्व जनसंख्या द्वारा आच्छादित पृथ्वी के प्रादेशिक भिन्नताओं को समझने में निहित हैं।"

(यादव & पालीवाल 2018) "किसी भी देश के समग्र विकास मैं वहां के मानव संसाधन का सबसे बड़ा योगदान होता है मानव अपनी शिक्षा तकनीकी ज्ञान विज्ञान का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर रहा है।" अत: देश की प्रगति के लिए जनसंख्या एक महत्वपूर्ण संसाधन एवं सम्पति है। मानव (जनसंख्या) की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी उपलब्धि किसी भी राष्ट्र के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः किसी क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता,

कार्यशील जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक है, ताकि वहाँ के सांस्कृतिक पर्यावरण एवं मानव संसाधन विकास के बारे में जानकारी हो सके।

(क्लार्क, 1972) "जनसंख्या वृद्धि, वितरण एवं सामाजिक संरचना संसाधनों की उपलब्धता, यातायात की सुविधा, मिट्टी की उर्वरता, शिक्षा पर निर्भर करता है।" 2011 की जनगणना आंकड़ों में राजस्थान राज्य की कुल जनसंख्या लगभग 6.86 करोड़ थी, जो भारत की जनसंख्या का 5.6% है। राज्य में उद्योग, जल संसाधन, मृदा संसाधन, खनिज संसाधन, शक्ति संसाधन, परिवहन आदि की उपलब्धता अपेक्षाकृत सीमित है। जबकि पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि अनवरत हो रही है, जो राज्य के विकास में एक अवरोध भूमिका निभा रही है। प्रस्तुत शोध अध्ययन अलवर जिले के संदर्भ में कर अलवर की जनसंख्या की विशेषताओं का क्षेत्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य :- प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1 अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि के स्वरूप को समझना।

2. अध्ययन क्षेत्र की जनसांख्यिकीय विशेषताओं के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण प्रस्तुत कर अधिकतम एवं निम्नतम वृद्धि क्षेत्रों की पहचान करना।

3. अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या गत्यात्मकता का वर्ष 2011 के आधार पर समीक्षा करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :-

अलवर जिला राजस्थान के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है और उत्तरी अक्षांश 27°03' और 28°14' और पूर्वी देशांतर 76°07' और 77°13' के बीच फैला हुआ है। इसमें 8720 वर्ग कि.मी. का भौगोलिक क्षेत्र शामिल हैं। दक्षिण से उत्तर तक इसकी लम्बाई लगभग 137 कि.मी. है पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई लगभग 110 कि.मी. है। जिले का कुल क्षेत्रफल राज्य के क्षेत्रफल का लगभग 2.45% है। जिले का आकार चतुर्भुज है। जिले के अधिकांश भाग में अरावली पर्वतमाला चट्टानी पहाड़ियों की चोटियों का निर्माण करती है। यह जिले के तिजारा उपखंड में उत्तर पूर्व से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए दक्षिण की ओर सीमा बनाते हुए लगभग 24 कि.मी तक चलती हैं तथा जिले के उत्तर पूर्व में नौगांव के पास समाप्त ही जाती है। एक और प्रमुख पर्वत श्रृंखला मुण्डावर में है, जो जिंदोली और अलवर से होकर जयपुर जिले के दक्षिण पश्चिम किनारे की ओर गुजरती है।

जिले की ग्रामीण और शहरी जनसंख्या क्रमशः 30.18 लाख और 6.54 लाख है (जनगणना, 2011) व जनसंख्या का घनत्व 438 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. है। जनगणना 2011 के अनुसार अलवर जिला प्रशासनिक दृष्टि से 12 तहसीलों विभाजित था।

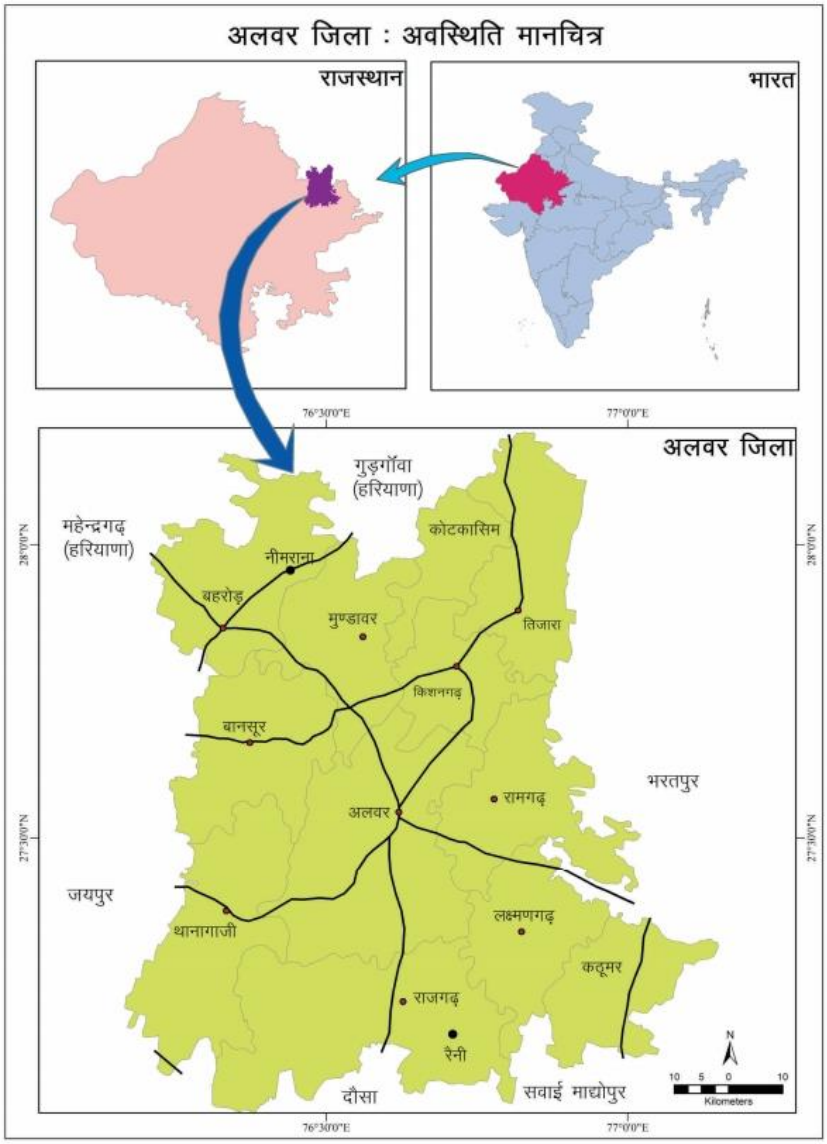

आकड़ों का एकत्रीकरण एवं शोध प्रविधि :-

समान्यतः शोध प्रविधि प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों का संग्रह होता हैं, यहाँ प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीय आकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आकड़ों में जिला सांख्यिकीय पत्रिका, भारत की जनगणना, अखबार, पत्रिकाएं, पुस्तकें, प्रकाशित पत्रों का प्रयोग किया गया है। आकड़ों के विश्लेषण हेतु तहसील को अध्ययन की इकाई माना गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :-

जनसंख्या वृद्धि :-

जनसंख्या वृद्धि एक क्षेत्र विशेष में निवासियों की संख्या में एक निश्चित समय के भीतर जैसे 10 वर्षों में रहते हुए परिवर्तन को दर्शाता है। जनसंख्या वृद्धि की दर धनात्मक एवं ऋणात्मक हो सकती हैं। किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या की वृद्धि वहाँ के जन्मदर, मृत्युदर तथा प्रवास पर निर्भर करती हैं। ये कारक जनसंख्या वृद्धि एवं कमी के बीच सतुलन स्थापित करते हैं। जनसांख्यिकीय

विशेषताओं में जनसंख्या वृद्धि किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जागरूकता के साथ जनसंख्या के वितरण घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता आदि को प्रभावित करती हैं।

अलवर जिले में जनसंख्या वृद्धि के आकड़ों तालिका – 1 में दिये गए है जिसमें वर्ष 1951 से 2011 के बीच दशकीय जनसंख्या वृद्धि के प्रतिरूप को प्रस्तुत किया गया है –

तालिका – 1 : जिला अलवर जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (1951 – 2011)

वर्ष	पुरुष	स्त्री	योग	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)			
				अलवर		राजस्थान	भारत
				संख्या	प्रतिशत	प्रतिशत	प्रतिशत
1951	454557	407436	861993	NA	NA	NA	NA
1961	576234	513792	1090026	+228033	+26.45	+26.2	+21.51
1971	737373	653789	1391162	+301136	+27.63	+27.83	+24.80
1981	927693	827882	1755575	+364413	+26.63	+32.97	+24.64
1991	1221534	1075046	2296580	+541005	+30.82	+28.44	+23.86
2001	1586752	1405840	2992592	+696012	+30.31	+28.41	+21.34
2011	1939026	1735153	3674179	+681587	+22.78	+21.31	+17.64

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

तालिका – 1 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 1981 तक भारत में जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः बढ़ी तथा 1991 से 2011 तक वृद्धि दर क्रमशः घटी, जिनमें वर्ष 1961–1971 के दशक में सर्वाधिक वृद्धि दर 24.80% रही है। तथा राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर वर्ष 1951 से क्रमशः अधिक हुई। वर्ष 2001 व 2011 में यह कम हुई। वर्ष 1951 में अलवर जिले की जनसंख्या थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर हो गयी। वर्ष 2011 में भारत की दशकीय वृद्धि दर 17.64% थी। वहीं राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर 21.31% तथा अलवर जिले की दशकीय वृद्धि दर 22.78% रही। अतः अलवर जिले के सम्पूर्ण विकास के लिए इस जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने की आवश्यकता हैं।

जनसंख्या का वितरण :-

संसार की जनसंख्या अथवा किसी भी देश की जनसंख्या उसके सभी भागों में समान रूप से वितरित नहीं है। भारत के लिए भी यही तथ्य लागू होता है। जनसंख्या वितरण पर मुख्य रूप से उच्चावच, जलवायु, वनस्पति, आर्थिक संसाधनों, मृदा, सामाजिक – सांस्कृतिक एवं राजनैतिक कारक का प्रभाव पड़ता हैं।

अलवर जिले में जनसंख्या वितरण के तहसीलवार आकड़ें तालिका – 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका - 2 : जिला अलवर : जनसंख्या वितरण प्रतिरूप

क्र.सं.	तहसील	पुरुष	स्त्री	योग
1	अलवर	187403	167725	355128
2	बानसूर	138905	124758	263663
3	बहरोड़	164380	148357	312737
4	कठुमर	121160	106399	227559
5	किशनगढ़बास	78288	72264	150552
6	कोटकासिम	71907	65432	137339
7	लक्ष्मणगढ़	145947	131172	277119
8	मुण्डावर	121648	109980	231628
9	राजगढ़	174921	155175	330096
10	रामगढ़	127039	116037	243076
11	थानागाजी	122907	110488	233395
12	तिजारा	135003	122433	257436
	जिला अलवर	1589508	1430220	3019728

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

अलवर जिले में वर्ष 2011 में सर्वाधिक जनसंख्या अलवर तहसील 355218 रही तथा सबसे कम कोटकासिम तहसील की 137339 रही।

जनसंख्या घनत्व :-

किसी भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। यह किसी क्षेत्र की जनसंख्या तथा क्षेत्रफल के अनुपात को प्रदर्शित करता है। अलवर जिले की जनसंख्या घनत्व की प्रवृत्ति को तालिका - 3 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका - 3 : जिला अलवर : जनसंख्या घनत्व की प्रवृत्ति

वर्ष	अलवर का जनघनत्व	राजस्थान का जनघनत्व	भारत का जनघनत्व
1991	274	129	267
2001	357	165	324
2011	438	200	382

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है की भारत, राजस्थान व अलवर जिला के जनसंख्या घनत्व में अत्यधिक विषमता है। 1991 में भारत का जनसंख्या घनत्व 267 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था, वहीं राजस्थान का 129 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तथा अलवर जिला का जनसंख्या घनत्व 274 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था। इसी प्रकार वर्ष 2001 में अलवर जिला तथा राजस्थान के जनसंख्या घनत्व में 192 का अंतर था वही वर्ष 2011 में यह अंतर बढ़कर 238 हो गया।

जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय प्रतिरूप :-

अलवर जिला में जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप के लिए जनसंख्या घनत्व के तहसीलवार आकड़ें तालिका - 4 में प्रस्तुत किये गए है।

तालिका - 4 : जिला अलवर : जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप

क्र.सं.	तहसील	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	घनत्व वर्ष 2011 (व्यक्ति/वर्ग किमी)
1	अलवर	983.83	407
2	बानसूर	662.76	398

3	बहरोड़	729.80	437
4	कठुमर	498.00	461
5	किशनगढ़बास	404.77	396
6	कोटकासिम	342.98	400
7	लक्ष्मणगढ़	625.05	447
8	मुण्डावर	573.24	404
9	राजगढ़	1426.32	236
10	रामगढ़	581.55	415
11	थानागाजी	1066.37	219
12	तिजारा	635.55	425
जिला अलवर		8380.56	367

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

अलवर जिला में वर्ष 2011 में जनसंख्या घनत्व 367 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। तहसील स्तर पर सर्वाधिक घनत्व कठुमर तहसील में 461 व्यक्ति प्रति वर्ग किमीजिसका प्रमुख कारण सिंचाईं सुविधाओं की उपलब्धता तथा प्राथमिक व्यवसाय का विस्तार है। सबसे कम जनसंख्या विस्तार थानागाजी तहसील का 219 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है, जिसका प्रमुख कारण अरावली पहाड़ी, पर्याप्त जल का अभाव एवं रोजगार के साधनों का अभाव होना है।

लिंगानुपात :-

व्यापक अर्थ में लिंगानुपात शब्द को अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। किसी जनसंख्या में पुरुष और स्त्री अनुपात को लिंगानुपात कहते हैं। विश्व की भांति भारत में भी लिंगानुपात से अभिप्राय प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या से हैं। लिंगानुपात किसी देश एवं क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे को प्रभावित करता है। लिंगानुपात का क्षेत्रीय विश्लेषण तालिका - 5 में दिया गया है।

तालिका - 5 : जिला अलवर : तहसीलवार लिंगानुपात प्रतिरूप 2011

क्र.सं.	तहसील	लिंगानुपात
1	अलवर	895
2	बानसूर	898
3	बहरोड़	903
4	कठुमर	878
5	किशनगढ़बास	923
6	कोटकासिम	910
7	लक्ष्मणगढ़	898
8	मुण्डावर	904
9	राजगढ़	887
10	रामगढ़	913
11	थानागाजी	899
12	तिजारा	907
जिला अलवर		900

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

तालिका - 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 2011 में अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में लिंगानुपात 800 है। तहसील स्तर पर सर्वाधिक लिंगानुपात किशनगढ़बास का 923 है तथा सबसे कम लिंगानुपात कठुमर तहसील का 878 है। लिंगानुपात कम रहने का मुख्य कारण दहेज प्रथा, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, लड़के की अनिवार्यता तथा अन्य सामाजिक मान्यताएं हैं।

साक्षरता :-

सामान्य अर्थ में साक्षरता का तात्पर्य पढ़ने, लिखने और सीखने की क्षमता से हैं। वर्तमान समय में किसी व्यक्ति के लिए साक्षरता एक बुनियादी आवश्यकता है। साक्षरता व्यक्ति के ज्ञान और क्षमता का विकास करती है। साथ ही साक्षरता व्यक्ति को सम्मान और समृद्धि का जीवन जीने के लिए सक्षम बनाता है। एक साक्षर व्यक्ति राष्ट्र निर्माण में अधिक सक्रियता से योगदान दे सकता है। स्वच्छता, स्वास्थ्य, सामाजिक समानता, आर्थिक सशक्तिकरण और पर्यावरण संपोषणीयता के प्रति साक्षर व्यक्ति अधिक जागरूक रहता है। अलवर जिला में साक्षरता का प्रतिरूप तालिका - 6 में दिया गया है।

तालिका :- 6 : जिला अलवर : साक्षरता प्रतिरूप 2011

क्र.सं.	तहसील	पुरुष साक्षरता	महिला साक्षरता	कुल साक्षरता
1	अलवर	73.42	53.9	64.21
2	बानसूर	67.21	44.48	56.46
3	बहरोड़	78.25	59.14	69.19
4	कठुमर	71.2	46.09	59.46
5	किशनगढ़बास	67.86	47.12	57.94
6	कोटकासिम	75.94	54.54	65.74
7	लक्ष्मणगढ़	67.03	40.89	54.65
8	मुण्डावर	75.03	52.42	64.29
9	राजगढ़	69.67	43.59	57.04
10	रामगढ़	63.22	37.87	51.12
11	थानागाजी	62.59	35.78	49.9
12	तिजारा	66.11	43.94	55.82
जिला अलवर		83.7	56.3	70.7

स्रोत :-- जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि अलवर जिले में कुल साक्षरता 70.7 % है, जो भारत की साक्षरता 74.04% से कम है। सबसे अधिक साक्षरता बहरोड़ तहसील की 69.19% है। जिसका कारण अत्यधिक शैक्षिक संस्थानों का होना तथा जनता की जागरूकता है। सबसे कम साक्षरता थानागाजी तहसील 49.90% की है जिसका कारण गरीबी और बेरोजगारी है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि एक प्रमुख समस्या है। जिससे क्षेत्र के संसाधनों पर दबाव बढ़ता है, जिस कारण लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य आवास और आधारभूत आवश्यकताओं के लिए समस्या का सामना करना पड़ता है।

अलवर की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर जिले में संसाधन काम हो रहे हैं। अलवर में पानी के लिए मारामारी तेजी से बढ़ रही है। अलवर जिला डार्क जोन में पहुंच चुका है। ऐसे में अगर बढ़ती जनसंख्या पर अंकुश नहीं लगाया गया तो हालात और भी भयानक होंगे।

अलवर शहर में जनसंख्या वृद्धि अधिक नहीं है, लेकिन मेवात क्षेत्र में जनसंख्या का तेजी से बढ़ना चिंता का विषय है। हरियाणा की सीमा से लगने वाले मेवात क्षेत्र में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इसके साथ ही भिवाड़ी, टपूकड़ा आदि क्षेत्रों में औद्योगिक विकास से लोग यहां आकर बस रहे हैं ऐसे में यहां संसाधन कम हो रहे हैं। अगर जल्दी अंकुश नहीं लगाया गया तो आगे हालात और भी भयानक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1 चांदना, आर. सी (201), "जनसंख्या भूगोल" : कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

2. मौर्य, एस. डी. (2009), "जनसंख्या भूगोल" : शारदा मीनाक्षी पब्लिकेशन, मेरठ।

3. यादव, नरेंद्र सिंह & पालीवाल, राजेश प्रसाद (2018), "अलवर जिले (ग्रामीण) में मानव संसाधन विकास" Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (Vol – 5).

4. यादव, राकेश (2023), "अलवर जिले में प्रजननशीलता प्रतिरूप: एक भौगोलिक अध्ययन" The International journal of analytical and experimental modal analysis (Vol – XV)

5. जनगणना विभाग, जयपुर (2011)।

7. क्लार्क, जे आई (1974), पॉपुलेशन ज्योग्रफी, पर्गामैन प्रेस, ओक्सफोर्ड।

6. समाचार पत्र, इन्टनेट (Google).